मैं पेमा तामंग...

प्रस्तुतिः स्निग्धा दास

पेमा तामंग की डायरी के कुछ पन्ने...

सिक्किम के पूर्व में एक सुन्दर-सा गाँव है – माज़ीटार। मैं यहीं पर रहती हूँ। अक्सर सोचती हूँ कि कितनी किस्मतवाली हूँ मैं जो सिक्किम में जन्मी। यहाँ तीस्ता नदी है, हिमालय पर्वत है। चारों ओर हरियाली है। तरह-तरह के फूल, पेड़, पौधे, पशु-पक्षी हैं। कई लोगों को तो गर्मी से बचने के लिए जाने क्या-क्या प्रबन्ध करने पड़ते हैं। पर हमारे यहाँ आराम है। कुदरती एयर कंडीशनर है। बड़ा अमन-चैन है यहाँ।

मैं अपने स्कूल की किताबों में बड़ी-बड़ी बिल्डिंगों, महलों, किलों, शॉपिंग मॉल के बारे में पढ़ती हूँ। उनकी तस्वीरें देखती हूँ तो उन्हें देखने का बहुत मन करता है। पता नहीं कब देख पाऊँगी? क्या है कि हम घूमने के लिए कम ही बाहर निकलते हैं। हफ्ते-पन्द्रह दिन में एक-आध बार ही रॉंग्फू हाट तक जाते हैं। बस। बड़ा मन करता है रेल में बैठकर जगह-जगह देखने का। मैं देखना चाहती हूँ कि बिना पहाड़ों की जगहें कैसी लगती हैं?

जब रेलवे मंत्री ममता बैनर्जी यहाँ आई थी तो मैं अपनी दोस्तों के साथ उन्हें सुनने गई थी। मैं यहाँ के मुख्यमंत्री से भी मिली थी। वे अक्सर हाई स्कूल में भाषण देने आते हैं। उनसे मिलना मुश्किल नहीं। हमारे गाँव के प्रधान जी इसकी व्यवस्था कर देते हैं।

मालूम है, उस वक्त तो मुझे लगा जैसे मैं कोई सपना ही देख रही हूँ जब ममता बैनर्जी ने कहा कि वे यहाँ पर रेलवे लाइन बिछवाने का काम ज़रूर करेंगी। आज से पाँच साल बाद ठीक इस जगह पर रॉंग्फू स्टेशन होगा। मैंने तो दिन गिनने भी शुरू कर दिए हैं। कितना मज़ा आएगा जब मैं सचमुच की रेल देखूँगी। हो सकता है उसमें बैठकर कहीं घूमने भी जाऊँ!

सुबह पाँच बजे उठो। तब तक सूरज उग चुका होता है। फिर मुँह-हाथ धोने के लिए सीधा तीस्ता नदी की ओर भागती हूँ। तीस्ता का बर्फीला पानी मुँह पर पड़ते ही नींद हवा हो जाती है।

छठी कक्षा में पढ़ती हूँ मैं। पढ़ाई-लिखाई करने के लिए बड़ी मेहनत करनी पड़ती है मुझे। सुबह पाँच बजे उठो। तब तक सूरज उग चुका होता है। फिर मुँह-हाथ धोने के लिए सीधा तीस्ता नदी की ओर भागती हूँ। तीस्ता का बर्फीला पानी मुँह पर पड़ते ही नींद हवा हो जाती है। इसके बाद मैं जंगल से लकड़ी इकट्ठा करने जाती हूँ। फिर घर जाकर चाय बनाती हूँ। अपने लिए, बाजे-बोजू (दादा-दादी), आमा-बाबा (माँ-पिताजी) और छोटे भाई-बहन के लिए। हम दो बहनें और एक भाई हैं। मेरा पूरा परिवार काम करता है – बस बाजे-बोजू नहीं जाते। मेरे बाबा एक नर्सरी में काम करते हैं। और भाई एक होटल में। मैं, मेरी बहन और माँ पहाड़ी के नीचे बसे मनिपाल तकनीकी संस्थान के कैम्पस के घरों में काम करने जाते हैं। हम सुबह-सवेरे काम पर निकल जाते हैं। घर में रह जाते हैं – बाजे-बोजू। हम नहीं होते तो यही लकड़ी से बने हमारे घर, हमारी जन्नत की देखभाल करते हैं। हमारा घर एक खड़ी चट्टान के किनारे बना है। नीचे दिखाई देता है मनिपाल तकनीकी संस्थान का कैम्पस।

किन-चुम-चू-बोमसा

चार घरों का काम निपटाकर मैं अपनी बहन के साथ घर की ओर भागती हूँ। मेरी बहन दो घरों में काम करती है। नौ बजे तक मैं घर पहुँचती हूँ। फटाफट हाथ-मुँह धोकर थुकपा (सूप और नूडल्स), मोमो, रोटी-सब्ज़ी या चावल खाती हूँ। और फिर तैयार होकर स्कूल की ओर चल देती हूँ। हम लोग ज़्यादातर हर जगह पैदल ही जाते हैं। मेरा स्कूल गाँव के काफी पास है।

दो-दरुल-चोरटन और उसमें चक्कर घुमाते बौद्ध लामा

स्कूल मेरे लिए एक और घर जैसा है। हमारे शिक्षक बड़े ही मददगार हैं। थापा मैडम ने तो मेरी बड़ी ही मदद की। उन्होंने मुझसे कहा कि गाँव की दूसरी लड़कियों की तरह मैं भी कम उम्र में ही शादी करके दूसरे गाँव न चली जाऊँ। मैंने सोचा है कि मैं दसवीं तक तो पढ़ूँगी ही पढ़ूँगी। फिर नौकरी करूँगी।

हमें दोपहर का भोजन स्कूल में ही मिलता है। भोजन के बाद मैं फुटबॉल खेलती हूँ। मुझे यह खेल बहुत पसन्द है। कभी-कभी तो हम लड़कियों की टीम लड़कों को भी हरा देती है। हमने अपने स्कूल में बहुत सारे पौधे उगाए हैं – कुछ फलों के, बहुत सारे फूलों के।

पढ़ाई और फुटबॉल के अलावा मुझे नाचने का भी बहुत शौक है। हमारे यहाँ कई सारे नाच होते हैं – भूटिया, लेपचा, नेपाली वगैरह वगैरह। स्कूल में होने वाले कार्यक्रमों में हम ताशी शादो, ता-शी-यांग-कु, मारुनी भी करते हैं। कोई कार्यक्रम हो तो मैं अपने घर में बच्चों को नाच सिखाती हूँ।

आठ पीरियड के बाद पौने चार बजे पूरी छुट्टी होती है। और हम सब दौड़ पड़ते हैं अपने-अपने घरों की ओर। फटाफट हाथ-मुँह धोती हूँ। ज़रूरी लगे तो बरतन धोने जैसी छोटी-मोटी मदद बोजू की कराती हूँ। 4.15 बजे एक बार फिर चल पड़ती हूँ पहाड़ी के नीचे कैम्पस में काम करने। बड़ा मन करता है वहाँ के हरे-भरे लॉन में बैठकर देर तक दोस्तों से गप्पें मारने का। पर घर में माँ की मदद भी तो करनी है खाना बनाने में। सो थोड़ी देर बैठी फिर चढ़ाई शुरू – घर की ओर। हमारे यहाँ 5.30 तक सूरज पहाड़ों के पीछे चला जाता है और 6 बजे जब घर पहुँचती हूँ तो अँधेरा हो चुका होता है। आमा खाना बनाती है और हम भाई-बहनें बरामदे में बैठकर पढ़ने लगते हैं। असल में क्या है कि हमारे बरामदे में छोटा-सा

ता-शी-यांग्-कू

भाई-बहनें बरामदे में बैठकर पढ़ने लगते हैं। असल में क्या है कि हमारे बरामदे में छोटा-सा बल्ब है। गली की लाइट उसमें जुड़कर रोशनी को बड़ा कर देती है। आठ बजे तक हम खा-पीकर सो जाते हैं।

कभी-कभी अपनी दोस्तों के साथ मैं पास के मन्दिर में जाती हूँ। वहाँ की दीवार के पास बैठकर गाना हमें बहुत अच्छा लगता है। बहुत अलग-अलग तरह के गाने गाते हैं हम। अक्सर हमारे गाँव के एक दाजु (भैया) अपना गिटार ले आते हैं। कभी वे हमारे गाने के साथ की धुन बजाते हैं, कभी कोई और।

मुझे लोग पेमा छोरी (कमल जैसी लड़की) भी कहते हैं। आमा बताती है कि मेरे बाबा मेरे पैदा होने पर बहुत खुश हुए थे। मेरे गुलाबी होंठ और गोरा रंग देखकर उन्होंने मेरा नाम पेमा रखा था। वैसे पेमा एक ताशी ताग्ये (आठ भाग्यशाली बौद्ध चिन्ह) भी है। पता है मैंने आजतक सचमुच का कमल का फूल नहीं देखा है। बस किताबों में ही उसकी तस्वीर देखी है।

मुझे लोग पेमा छोरी (कमल जैसी लड़की) भी कहते हैं। पर मैंने आज तक सचमुच का कमल का फूल नहीं देखा है। बस किताबों में ही उसकी तस्वीर देखी है।

सिक्किम की राजधानी गंगटोक है। यह माजीटार से 34 किलोमीटर दूर है। मैं वहाँ तीन बार गई हूँ। बहुत सुन्दर जगह है वो। एक पहाड़ पर बसा होने के कारण वो रात में और भी सुन्दर लगता है। बस एक ही दिक्कत है वहाँ। बड़ी भीड़-भाड़ है। हमारे यहाँ तो सब कितना शान्त लगता है।

बाबा अकसर गंगटोक और आसपास की नर्सरियों में पौध लेकर जाते हैं। लौटते समय वे खूब सारी चीज़ें लाते हैं – कागज़ के खिलौने, खाने-पीने की चीज़ें वगैरह वगैरह। वो जो शा फाले लाते हैं ना उसका तो कोई जवाब नहीं। यह एक बड़ा-सा मोमो है। मैदे को बेलकर उसमें माँस भरते हैं। फिर इसे भाप दिलाकर तला जाता है। आमा भी खास मौकों पर इसे बनाती है। बाबा पीने के लिए हल्की शराब जैसी एक चीज़ लाते हैं। यह सन्तरे से बनती है। सर्दियों में हम सब एक-साथ बैठकर इसे थोड़ी-थोड़ी पीते हैं।

पर, कभी-कभी बाबा बहुत शराब पीकर आते हैं। तब घर में अजीब-सा माहौल हो जाता है। माँ सारी स्थिति सम्भालती है। मैं चाहती हूँ कि मेरे प्यारे बाबा को कभी-भी इसकी लत न लगे। मैं प्रार्थना करती हूँ। मेरे कानों में गंगटोक के स्तूप दो-दरुल-चोरटन में चक्कर घुमाते हुए कहे शब्द गूँजने लगते हैं – *ओम मनी पदमे हम!* इसे बुदबुदाते हुए मैं नींद में गुम हो जाती हूँ...